# राम की कहानी

अमर चित्र कथा

संख्या १५ रु. ३.००

अमर चित्र कथा

DA-15-Rs. 10.00

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

# राम की कहानी

अमर चित्रकथा द्वारा भारतीय संस्कृति से परिचय बढ़ायें

डायमण्ड कामिक्स

रामायण संस्कृत भाषा का सर्व-प्रथम महाकाव्य है और वास्तविक कविता की सबसे प्राचीन रचना है। इसी कारण इसके रचयिता, वाल्मीकि ऋषि, आदि कवि माने जाते हैं।

कहा जाता है कि एक क्रौंच पक्षी किसी निर्दयी बहेलिये के बाण का शिकार हो गया तो उसकी मादा की जो करुण दशा हुई उसे देख कर वाल्मीकि के सहानुभूति-भरे हृदय से कविता झरने की तरह फूट निकली। जो जीवंत भावनाएँ यों स्वत: ही बह निकली थीं उन्होंने सशक्त महाकाव्य का रूप लिया। गत २००० वर्षों से भी अधिक समय से यह महाकाव्य भारत के मानस को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। रामायण हमारी उपलब्धियों का ऐसा अभिन्न अंग है कि इसके विभिन्न भाषाओं के संस्करणों में, जो परस्पर एकदूसरे से थोड़े-बहुत भिन्न हैं, हमारी विविधता प्रितिबिम्बित होती है। कविन, तुलसीदास अथवा तुंचन की कृतियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में एक ही विषय का प्रतिपादन करती हैं। और यह विषय राम और सीता के चरित्र में 'पुरुष' एवं 'स्त्री' के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत करता है। राम का जीवन बताता है कि ईश्वर सर्वोत्तम पुरुषों में स्वयं को परिपूर्ण करता है। यही रामायण की कथा है।

अमर चित्र कथा अर्थात उत्तम पुस्तकें
अब २६० से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।

Published by H.G. Mirchandani for India Book House Education Trust, Rusi Mansion, 29, Nathalal Parekh Marg, Bombay 400 039 and printed by Deepak G. Mirchandani at IBH Printers, Marol Naka, Mathuradas Vissanji Road, Andheri (East), Bombay 400 059.
**Editor: Anant Pai Translation: Meena Khanna Artwork: Pratap Mulick**

# अमर चित्रकथा
## अब डायमण्ड कामिक्स में

# राम की कहानी

रामायण संस्कृत भाषा का सर्व-प्रथम महाकाव्य है और वास्तविक कविता की सबसे प्राचीन रचना है। इसी कारण इसके रचयिता, वाल्मीकि ऋषि आदि कवि माने जाते हैं।

कहा जाता है कि एक क्रौंच पक्षी किसी निर्दयी बहेलिये के बाण का शिकार हो गया तो उसकी मादा की जो करुण दशा हुई उसे देख कर वाल्मीकि के सहानुभूति-भरे हृदय से कविता झरने की तरह फूट निकली। जो जीवंत भावनाएँ यों स्वतः ही बह निकली थीं उन्होंने सशक्त महाकाव्य का रूप लिया। गत् 2000 वर्षों से भी अधिक समय से यह महाकाव्य भारत के मानस को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। रामायण हमारी उपलब्धियों का ऐसा अभिन्न अंग है कि इसके विभिन्न भाषाओं के संस्करणों में, जो परस्पर एक दूसरे से थोड़े-बहुत भिन्न हें, हमारी विविधता प्रतिबिम्बित होती है। कविन, तुलसीदास अथवा तुंचन की कृतियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में एक ही विषय का प्रतिपादन करती हैं। और यह विषय राम और सीता के चरित्र में 'पुरुष' एवं 'स्त्री' के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत करता है। राम का जीवन बताता है कि ईश्वर सर्वोत्तम पुरुषों में स्वयं को परिपूर्ण करता है। यही रामायण की कथा है।

## डायमण्ड कामिक्स में प्रकाशित अमर चित्रकथा

| | | |
|---|---|---|
| कृष्ण | गुरु नानक | गुरु हर गोविन्द |
| शकुन्तला | पंचतंत्र- I | हितोपदेश- I |
| राम | बीरबल- I | जातक कथाएँ- I |
| हरिश्चन्द्र | झांसी की रानी | प्रहलाद |
| हनुमान | कबीर | छत्रसाल |
| बुद्ध | महावीर | पद्मिनी |
| शिवाजी | गणेश | रंजीत सिंह |
| राणा प्रताप | विवेकानन्द | तुलसीदास |
| गुरु गोबिन्द सिंह | महात्मा गांधी | चैतन्य महाप्रभु |
| अशोक | दुर्गावती | राजा भोज |

Translation : Meena Khanna

Artwork : Pratap Mulick

*Editor*:Anant Pai

© 1994 India Book House Pvt. Ltd. Bombay

Published by : Narender Kumar for Diamond Comics Pvt. Ltd. 2715, Darya Ganj, New Delhi-110002

and Printed at : Best Photo Offset Printers Okhla.Phase-II New Delhi.

# राम की कहानी

बहुत पहले सरयू नदी के किनारे
अयोध्या नगरी में राजा दशरथ राज्य करते थे।
उनके चार पुत्र थे– राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

लक्ष्मण, देखा! राम के बाण ने पत्थर के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

इतने आश्चर्य की क्या बात है, भरत! राम ने पहले ही कहा था कि निशाना चूकेगा नहीं।

राम रानी कौशल्या के लड़के थे, भरत रानी कैकेयी के, और लक्ष्मण और शत्रुघ्न रानी सुमित्रा के। सभी एक दूसरे को बहुत चाहते थे।

वे राक्षस मेरी तपस्या में विघ्न डालते हैं। केवल राम इनसे निबट सकते हैं।

धनुर्विद्या में राम की निपुणता के बारे में दूर-दूर के लोग जानते थे। वनवासी विश्वमित्र भी।

राजा दशरथ की अनुमति से वे राम और लक्ष्मण को वन में ले आये। एक दिन—

देखो राम, ताडका राक्षसी आ रही है!

राम और ताड़का में घमासान युद्ध हुआ।

और अंत में—

राक्षसों के आक्रमण बढ़ने लगे, पर राम ने अपने बाणों से उन्हें मार भगाया।

अब पशु पक्षी सुख से घूम रहे हैं।

हाँ बेटा, अब उन्हें राक्षसों का डर नहीं रहा।

कुछ दिनों बाद_

राजा जनक की पुत्री सीता का स्वयंवर हो रहा है। आओ, वहाँ चलें।

राजा जनक के महल में_

जो इस धनुष को चढ़ा देगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

एक के बाद एक सभी राजकुमार आगे आये।धनुष चढ़ाना तो दूर, किसी से वह हिला तक नहीं।

कोई भी सफल न रहा। पर सब मिलकर इसे उठा लेंगे।

बेटा राम! सब हार गये। अब तुम जाओ और धनुष चढ़ा कर सीता का दुख दूर करो!

राम ने धनुष आसानी से उठा लिया। उनके बल से वह टूट भी गया।

सीता ने जैसे ही राम को देखा, उसके हर्ष की सीमा न रही।

जब यह हर्षदायक समाचार अयोध्या पहुँचा तो राजा दशरथ बरात सजाकर मिथिला को चल पड़े...

..जहाँ राम का विवाह सीता से हुआ।

अरे, मेरे बाल पकने लगे राजगद्दी राम को दे देनी चाहिए!

अनेक हर्षपूर्ण वर्ष बीते। एक दिन—

सभी इस शुभ समाचार से प्रसन्न थे, कैकेयी की दासी मंथरा को छोड़कर।

राम का राजतिलक होने वाला है!

मेरा बस चले तो यह न होने दूँ!

मंथरा! क्या हो गया है तुझे?

कल राम का राजतिलक है, और भरत को ननिहाल से बुलाया तक नहीं गया!

तो क्या हुआ?

कौशल्या का बेटा राज करेगा, तुम्हें माँ-बेटे के अधीन रहना पड़ेगा।

कैकेयी मंथरा की बातों में आ गयी।

आज ही राजा से अपने दो पुराने वरदान माँग लो। भरत के लिये राजगद्दी माँगो और राम के लिये चौदह साल का वनवास!

बाद में—

कोप भवन में क्यों हो, रानी?

कैकेयी ने अपनी माँगें रखीं।

तुम चाहती हो तो भरत को अभी गद्दी दे सकता हूँ, लेकिन दूसरा वरदान देना बड़ा कठिन है रानी!

अपना वचन पूरा नहीं करोगे तो विश्व में झूठे कहलाओगे।

इन कठोर शब्दों को सुनकर राजा अचेत होकर गिर पड़े।

राम के प्रति इतनी कठोर न बनो रानी! वह अत्यन्त सज्जन है।

जब राम को पता चला—

माँ, मैं पिता का वचन पूरा करूँगा

सीता और लक्ष्मण ने भी वन में राम के साथ जाने की ज़िद की।
उनके पीछे थी – अयोध्या की जनता।

मंत्रिवर! आप इन्हें समझा-बुझा कर वापस तो कीजिए।

नहीं, हम सब आपके साथ चलेंगे।

जब शाम हुई, तो वे विश्राम के लिए रुके।

अगले दिन सुबह—

चलो निकल चलें, ये सब जाग गये तो साथ चल देंगे।

गंगा के किनारे राम, लक्ष्मण और सीता मंत्री सुमंत से विदा माँगने लगे।

हम नदी पार कर दक्षिणी दिशा की ओर जायेंगे। आप वापस अयोध्या को जायें

अयोध्या में लौटकर मंत्री राजा के पास आये।

हा राम!

और राजा के प्राण निकल गये।

भरत अपने ननिहाल से लौट कर सीधे अपनी माँ के पास पहुँचे।

माँ, क्या बात है? सब चुप क्यों हैं?

सब ठीक है। तुम राजा बनोगे। तुम्हारे पिता नहीं रहे, और राम को चौदह वर्षों का वनवास मिला है।

भरत सुनकर सन्न रह गये। राजगुरु वशिष्ठ ने उन्हें सान्त्वना दी।

दुखी न हो बेटा। अब अपने धर्म का पालन करो— राज्यभार सँभालो!

मुझे राजपाट नहीं चाहिए! मैं अभी राम के पास जाता हूँ!

चित्रकूट में जहाँ राम, लक्ष्मण और सीता रह रहे थे—

भरत सेना लेकर लड़ने आ रहे हैं, मैं...

नहीं लक्ष्मण! धीरज से काम लो। भरत को आने दो।

भरत, मेरे प्यारे भाई भरत!

प्रिय राम, हम सब तुम्हें वापस ले चलने आये हैं

क्षमा करें गुरुदेव! पिता का वचन भंग न होने दें।

मुझे राजगद्दी नहीं चाहिए। आप नहीं चलेंगे तो मैं आपकी पादुकाएँ सिंहासन पर रखकर आपके नाम से राज्य करूँगा।

भरत के जाने के बाद राम, लक्ष्मण और सीता दक्षिण में पंचवटी में रहने लगे। एक दिन—

कितना आकर्षक और बलशाली पुरुष है! इसे अपना बनाऊँगी।

भद्र! मैं शूर्पणखा हूँ, आपके साथ ही रहना चाहती हूँ!
मैं तो विवाहित हूँ बाले! तुम लक्ष्मण के पास जाओ।
मैं तो उनका सेवक हूँ, तुम उन्हीं के पास जाओ!
शूर्पणखा विकराल रूप धारण कर सीता की ओर दौड़ी।
लक्ष्मण ने क्रोध में उसके नाक कान काट दिये। वह चीखती चिल्लाती अपने भाई खर-दूषण के पास गयी।
हा खर! अरे दूषण!

तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्दशा!

हम इसका बदला लेकर रहेंगे, बहन!

खर और दूषण राक्षसों की सेना लेकर राम से लड़ने आये।

अरे बाप रे! उन्होंने तो खर और दूषण को भी मार डाला, भागो भागो!

अब शूर्पणखा अपने भाई लंकापति दशानन रावण के पास आयी।

मैं इस अपमान का बदला अवश्य लूँगा। मामा मारीच से परामर्श करना होगा।

रावण, राम बहुत शक्तिशाली है। उसे युद्ध में हराना आसान नहीं।

आप स्वर्णमृग बनकर राम को चकमा देकर दूर ले जाना, मैं सीता को उठा ले जाऊँगा।

रावण ने मारीच से बात की-

कितना प्यारा स्वर्णमृग है! मुझे ला दो न!

अभी लाता हूँ, सीते!

पंचवटी में-

स्वर्णमृग का पीछा करते करते राम घने वन में चले गये। तभी स्वर्णमृग मानवस्वर में चीखा-

हा लक्ष्मण!

पर उन्होंने कहा था कि मैं आपको अकेले न छोड़ूँ।

लक्ष्मण, राम तुम्हें बुला रहे हैं।

अपने भाई की सहायता नहीं करोगे, लक्ष्मण!

मैंने तुम्हें नहीं पुकारा था लक्ष्मण, यह इस राक्षस की चाल थी।

इसबीच रावण संन्यासी के रूप में सीता के पास आया।

साधु को भिक्षा मिले देवी!

सीता भिक्षा लेकर रावण के पास आयीं कि रावण ने उन्हें उठा लिया...

...और अपने रथ में उड़ा ले चला।

बचाओ, राम ! लक्ष्मण बचाओ! दौड़ो!

कोई तो बचाओ इस राक्षस से!

गिद्ध जटायु बचाने को दौड़ा।

अरे जा बूढ़े गीध, तू रावण का सामना करने चला है !

जब सीता को खोजते हुए राम वहाँ पहुँचे

मैं बचा न पाया, रावण उन्हें लेकर दक्षिण की ओर चला गया!

बेचारा जटायु! मेरे लिए उसने अपनी जान दे दी!

सीता को खोजते हुए वे और आगे गये, जहाँ उनकी भेंट वानरपति बालि के भाई सुग्रीव और मंत्री हनुमान से हुई।

मैं भी दुखी हूँ राम! मेरे भाई बालिने मेरी पत्नी छीनली है, और मैं डर के मारे जंगल में भाग आया हूँ! आप मेरी सहायता करें, मैं आपकी सहायता करूँगा।

राम ने बालि को मार कर सुग्रीव को राजा बना दिया और बालिपुत्र अंगद को युवराज।

बाद में–

हनुमान! अब तुम अपनी टोली लेकर सीता का पता लगाओ!

हनुमान, यह अँगूठी लेते जाओ। यदि सीता मिल गयीं तो वे इसे पहचान लेंगी।

खोजते-खोजते रीछ-वानर सेना समुद्र के दक्षिणी किनारे पहुँच गयी

हनुमान! तुम्हीं इतनी लंबी छलाँग लगा सकते हो!

हनुमान आकाश में उड़ चले।

लंका में—

अब सीता की खोज करता हूँ।

अंत में एक वाटिका में—

शायद सीता ही हैं!

हनुमान ने राम की अँगूठी पेड़ से गिरा दी।

राम के बिना जीते इतने दिन हो गये; मन होता है आत्महत्या कर लूँ। अरे यह राम की अँगूठी! यहाँ कैसे!

अँगूठी मैं लाया था। मैं लौटकर राम को आपके बारे में बताऊँगा। वे रावण का वध कर आपका उद्धार करेंगे।

हनुमान नीचे उतर आये।

जाने के पहले मैं इन राक्षसों को मजा तो चखवाता जाऊँ।

पकड़ो, पकड़ो इस बंदर को।

हनुमान ने वाटिका के आसपास मिले सब राक्षसों को मार गिराया। रावण ने अपने बेटे अक्षयकुमार के साथ कुछ और राक्षस भेजे।

रावण के दरबार में–

बेटा मेघनाद, तुम उस बंदर को पकड़कर यहाँ ले आओ।

उस बंदर ने राजकुमार अक्षयकुमार को भी मार डाला।

मेघनाद हनुमान को बाँधकर दरबार में लाये।

लगा दो इस दुष्ट बंदर की पूँछ में आग!

अब मज़ा आयेगा!

हनुमान ने अपनी रस्सियाँ ढीली कर दीं। उनकी पूँछ लम्बी हो गयी। उससे उन्होंने सारी लंका में आग लगा दी।

अरे भागो, भागो, बड़ा दुष्ट बंदर है!

लंका जला कर हनुमान राम के पास लौट आये।

सीताजी लंका में हैं! उन्होंने यह आभूषण दिया है। अब हमें लंका पर चढ़ाई कर देनी चाहिए।

विशाल वानर-रीछ सेना के साथ राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान समुद्र तट पर आये।

जब यह समाचार रावण को मिला तो उसके भाई विभीषण ने उसे समझाया—

दुसरे की पत्नी का हरण करना उचित और बुद्धिमत्ता पूर्ण नहीं है।

निकल जा यहाँ से! यह उपदेश उन्हीं भिखमंगे छोकरों को दे जा कर!

दयालु राम ने विभीषण को अपनी शरण में रख लिया।

दुश्मन का भाई, यहाँ! कोई भेद होगा!

शरण में आने वाले को शरण देनी ही पड़ती है, सुग्रीव!

समुद्र पार करने के लिए एक पुल बनाया गया।

चलो लंका!

चलो लंका!

चलो लंका!

युद्ध के लिए दोनो तरफ सेनाएँ तैयार हो गयीं।

अंगद, युद्ध से पूर्व तुम रावण के दरबार में जाकर उसे मेरा संदेश दो।

राजकुमार अंगद दूत बनकर रावण के दरबार में पहुँचे।

सीताजी को लौटा दो। राम शांति से लौट जायेंगे।

जा कर कह दो अपने राम से, मैं झुकने वाला नहीं। हम युद्ध चाहते हैं।

अंगद लौट आये और युद्ध शुरू कर दिया गया।

रावण के बेटे मेघनाद के शक्ति-बाण से लक्ष्मण अचेत हो कर गिर गये।

सुषेण वैद्य ही इन्हें अच्छा कर सकते हैं...

मैं जाकर ले आता हूँ उन्हें।

हनुमान सुषेण को उनके घर सहित उठा लाये।

अगर कोई सुबह के पहले संजीवनी बूटी ला सके तो लक्ष्मण जीवित हो सकते हैं।

मैं लाता हूँ!

राम विलाप करते रहे।

हा लक्ष्मण, तुम्हारे बिना मैं कैसे रहूँगा!

यह लीजिये, संजीवनी वाला पहाड़!

संजीवनी के प्रभाव से लक्ष्मण जी उठे। सभी प्रसन्न हुए।

लेकिन अब रावण का भाई कुंभकर्ण वानर सेना में कहर मचाने लगा—

पर राम के सामने उसकी एक न चली।

और कुंभकर्ण मारा गया।

मेघनाद को लक्ष्मण ने मार गिराया।

राक्षसों में भगदड़ मच गयी।

रावण के शिविर में—

तो मेघनाद भी मारा गया?

राम को मारने के उद्देश्य से रावण ने घमासान युद्ध किया।

अपने बीस हाथों से उसने वानर सेना पर बाणों की घनघोर वर्षा की।

मेरे लड़के के हत्यारे लक्ष्मण ! तेरी मौत आ गयी है !

फिर राम और रावण आमने सामने आये। राम के पास इंद्र का भेजा हुआ रथ था।

यह उधार का रथ काम नहीं देगा! रावण का सामना मौत का सामना है।

अपनी माया शक्ति से रावण ने अनेक रावण पैदा कर दिये।

वानर सेना में आतंक छा गया। केवल हनुमान वीरतापूर्वक युद्ध करते रहे।

रावण मरता ही न था। राम उसका एक सिर काटते---

--तो उसके स्थान पर दूसरा पैदा हो जाता।

विभीषण, पिछले अठारह दिनों की लड़ाई में मैंने अनेक बार रावण के सिर काटे, लेकिन वह मरता ही नहीं।

इसलिए कि उसकी नाभि में अमृत है।

राम ने तान कर एक बाण रावण की नाभि में मारा और फिर तो बाणों से उसके सिर और भुजाएँ कट-कट कर गिरने लगे।

रावण मर गया।

श्री राम की जय!

विभीषण, लंका का राज्य तुम संभालो।

लक्ष्मण ने धूमधाम के साथ विभीषण का तिलक किया।

विभीषण के राजतिलक के बाद राम पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या लौटे।

सीता, तुम्हारे दुख के दिन समाप्त हुए।

अयोध्या के राजा बनने के बाद राम ने अनेक वर्षों तक राज्य किया।

# डा य म ण ड कॉ मि क स में

## कार्टूनिस्ट प्राण के सदाबहार चरित्र

**चाचा चौधरी, साबू, बिल्लू, पिंकी, श्रीमतीजी, रमन, चन्नी चाची के नये हंसाने, गुदगुदाने वाले कामिक्स**

**अग्निपुत्र और अभय के सनसनीखेज व हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर मनोरंजक व अत्यन्त रोमांचक कॉमिक**

**अग्निपुत्र अभय और खरदुल्ला**




**ज्वालामुखी**

**जो दुनिया को दहकते अंगारों पर नचाने का शैतानी इरादा रखता था।**

**डायनामाइट**

**खलनायक का खतरनाक अन्दाज शोले बरसाता, आतंक फैलाता, विनाश का लावा- ज्वालामुखी**

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002